Dated - 15/04/2020

डा० अनीता कुमारी गुप्ता

असत्कार्यवाद (न्याय वैशेषिक)

डॉ० अनीता कुमारी गुप्ता, गो० के० कॉलेज

न्याय वैशेषिक कारण कार्यवाद को असत्कार्यवाद कहते हैं। इसका दूसरा नाम आरम्भवाद भी है। इसको असत्कार्यवाद इसलिए कहा जाता है कि इसके अनुसार कार्य उत्पन्न होने के पहले अपने कारण उपादान कारण में नहीं रहता। जैसे घड़ा बनने के पहले मिट्टी में नहीं रहता।

असत् कार्यवाद का शाब्दिक अर्थ है "कार्य का अस्तित्व इसके कारण उपादान कारण नहीं होता" इसको आरम्भवाद इसलिए कहते हैं कि कार्य नया रूप है यह कारण में नहीं था। कार्य का आरम्भ होता है जैसे धागा कपड़े का कारण है किन्तु कपड़ा एक नया रूप है, यह पहले से धागे में नहीं था। कार्य का यह नया रूप जैसे कपड़ा जो धागे में पहले नहीं था, एक नया आरम्भ है, जो पहले नहीं था अब उसका आरम्भ हुआ है। सारांश में कारण और कार्य में अंतर है। इसी से पता चलता है कि कार्य का आरम्भ होने से पहले या उत्पन्न होने से पहले अपने कारण में नहीं था अर्थात् असत् था। इसीलिए

(Independence Day) WED 15

IMPORTANT

AUGUST 2012

इसे असतकार्यवाद कहते हैं। कार्य का नया आरम्भ होता है अतः इसे आरम्भवाद भी कहते हैं।

असत्कार्यवाद के पक्ष में तर्क या असत्कार्यवाद द्वारा सांख्य के सत्कार्यवाद का खण्डन → कार्य का अस्तित्व अपने कारण में नहीं होता इसके लिए न्याय वैशेषिक कुछ तर्क देता है।

(1) असत कार्यवादी कहते हैं कि कार्य नया आरम्भ है। कार्य उत्पन्न होने के पहले कारण में नहीं रहता। यदि कार्य उत्पन्न होने के पहले कारण में मौजूद रहता तो निमित्त कारण की क्या आवश्यकता थी। जैसे यदि मिट्टी में घड़ा पहले ही से मौजूद है तो कुम्हार की क्या आवश्यकता कुम्हार को बनाने के लिए क्या बचा हुआ है जिसे कुम्हार बनाएगा। अर्थात कार्य कारण में पहले से मौजूद नहीं होता। कार्य तो नया आरम्भ है।

(2) कार्य कारण में भेद है अर्थात प्रत्येक कार्य अपने कारण से भिन्न है, यदि कार्य कारण में रहता तो दोनों एक होते। दोनों में भेद करना सम्भव न रहता किन्तु देखने में यह आता है कि कार्य

को कार्य तथा कारण को कारण की संज्ञा दी जाती है। इसीलिए घड़े और मिट्टी में अंतर किया जाता है। मिट्टी को कोई घड़ा नहीं कहता और न घड़ा को कोई मिट्टी कहता है। अतः कार्य तथा कारण में भेद स्पष्ट है।

(3) यदि कार्य कारण में (सत्) रहता तो दोनों को अलग-अलग नामों से क्यों पुकारते हैं अर्थात कारण और कार्य को अलग-अलग नामों से अभिहित किया जाता है। मिट्टी घड़े का कारण है इसलिए मिट्टी को मिट्टी कहते हैं और घड़े को घड़ा कहते हैं। यदि कार्य कारण में रहता तो दोनों को अलग-अलग नामों से नहीं पुकारते।

(4) प्रयोजन की सिद्धि से भी पता चलता है कि कार्य-कारण में सत् नहीं है। यदि कारण में कार्य रहता तो दोनों से

एक ही कार्य की सिद्धि होती। किन्तु ऐसा देखने को नहीं मिलता। मिट्टी से जिस प्रयोजन की सिद्धि होती है वही प्रयोजन घड़े से सिद्ध नहीं होता इससे सिद्ध है कि कार्य कारण में पहले से मौजूद नहीं रहता।

Scanned by CamScanner

(5) कार्य उत्पत्ति के पूर्व कारण में नहीं होता। यदि कार्य उत्पत्ति के पूर्व कारण में सत् होता तो यह नहीं कहा जाता कि 'उत्पन्न हुआ है'। यदि कार्य अर्थात् घड़ा मिट्टी में पहले से है तो यह क्यों कहा जाता है कि 'घड़ा मिट्टी से बना हुआ है'? अतः स्पष्ट है कि कार्य उत्पत्ति के पूर्व कारण में असत् है।

(6) कार्य और कारण में आकार का अन्तर यह सिद्ध करता है कि कार्य कारण में सत् नहीं रहता। घड़े का रूप मिट्टी के रूप से भिन्न है। घड़े का रूप मिट्टी में होता तो मिट्टी के लौंदे से कुम्हार को घड़ा बनाने की क्या आवश्यकता। अतः दोनों भिन्न हैं। घड़ा मिट्टी में नहीं है। इस घड़े का रूप अलग और मिट्टी का रूप अलग दीखते हैं। अतः कार्य कारण में नहीं रहता

19 SUN

IMPORTANT !

इन उपयुक्त तर्कों द्वारा न्याय-वैशेषिक असत्कार्यवाद को सिद्ध करते हुए सांख्य के सत्कार्यवाद का खण्डन करता है।

Scanned by CamScanner